















## कांवड़ियों की सुरक्षा के लिए बाइक व एंबुलेंस रहेंगी तैयार: डीएम

शाह टाइम्स संवाददाता

बागपत। गुरुवार को जिलाधिकारी अस्पता लाल ने कलेक्टर परिसर से बाइक एंबुलेंस का हड्डी झड़ी दिखाकर कांवड़ियों की स्थिति बन जाना किया। कांवड़ियों वाले दौरा न श्रद्धालुओं को तत्काल चिकित्सा सामान्य उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जिला प्रशासन ने एक महत्वपूर्ण पहल की है।

इस अवसर पर जिलाधिकारी ने कहा कि कांवड़ियों वाले दौरा न मार्ग पर भी अधिक स्थिति बन जाती है, ऐसे में सामान्य एंबुलेंस का मौके पर हड्डी खुला होता है। बाइक एंबुलेंस के माध्यम से तीर्थी यात्रियों को तुरंत प्राथमिक उपचार उपलब्ध कराया जा सकता। उन्होंने कहा कि यात्रा के दौरा न स्थान्त्रिक सुविधा की सर्वोच्च



प्राथमिकता है और यह पहल सुनिश्चित करेंगी कि कोई भी बाइक एंबुलेंस के माध्यम से तीर्थी यात्रियों को तुरंत प्राथमिक उपचार उपलब्ध कराया जा सकता। उन्होंने कहा कि यात्रा के दौरा न स्थान्त्रिक सुविधा की सर्वोच्च

## बंदरों ने महिला पर हमला कर किया घायल, बंदरों को पकड़वाने की मांग

शाह टाइम्स संवाददाता

बागपत। पुरुष यांव में एक महिला बंदर के हमले का शिकाय हो गई। राष्ट्रीय को पली कमलेश अपने घर के बारामदे में काम कर रही थी। उस दौरा छाते पर बैठे बंदर ने अचानक उस पर हमला कर दिया।

बंदर ने महिला के द्वारा हमला किया गया किंवदं बंदर के बारामदे में काम कर रही थी। महिला की चीजें सुनार कर आसापास के ग्रामीणों मौके पर पहुंचे। ग्रामीणों ने लाली-डड़े दिखाकर बंदर को बहाने से भागा। घायल महिला को पहले बिनौली

सोशली ले जाया गया। महिला को

गंभीर स्थिति के देखते हुए उसे दिल्ली के गुरु तेग बहादुर अस्पताल रेफर कर दिया गया। महिला के बैठे कल्प के अनुसार वाले के माध्यम से कांवड़ियों को साकरी जीतीजी अस्पताल में की गई है। पूर्व फौजी शरद तामर ने बताया कि वे जल्द ही बंदरों को पकड़वाने की मांग पर लेकर कांवड़ियों के डीरेंग से मुलाकात करेंगे। क्षेत्र में बंदरों के हमलों से यामीन परेशन है और उनकी सुरक्षा की मांग कर रहे हैं।

जगह-जगह शिव भक्तों के लिए

## हरिद्वार से कंधों पर बैठकर माता-पिता को लेकर आया कांवड़िया

शाह टाइम्स संवाददाता

बड़ौता हरियाणा सानीपत पानीपत के कांवड़ियों पैरों में खुंबुंग बोंध कर शिव की महापूजा करते हुए अपने-अपने शिवालयों की तरफ बढ़ रहे हैं। सड़कों पर जय-जयकार करते हुए बाल वर्म भारत माता की जय शिव शक्ति का जयकारा हो रहा है। अपने कंधों पर गंगाजल लेकर कांवड़ियों के दौरा नगर के दिल्ली रोड होते हुए चल रहे हैं। कांवड़िया हरिद्वार से गंगाजल लेकर 23 जुलाई को जलाधिकर करेंगे। श्रद्धालुओं ने शिवर लगाकर शिव भक्तों को भोजन खिला रहे हैं। शिवर विवर से गंगाजल के पैरों में व्यवस्था चिकित्सा व्यवस्था रुक-रुक कर आराम कर रहे हैं। शिवर में भोजन श्रद्धालुओं ने शिवर लगाकर की है।

उपलब्ध कराई गई है और प्रशिक्षित स्वास्थ्य कर्मियों की तैयारी की गई है। उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. यशवंत यात्रा पर निकला है। सागर अपनी पत्नी ने, एक साल की बेटी हीरा और बाई अनिकत के साथ हरिद्वार से गंगाजल लेकर अपने गांव की ओर जारी है। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. तीरथ लाल ने बताया कि बाइक एंबुलेंस में प्राथमिक उपस्थित रहे। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा.

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-





## ट्रम्प की चाहत

अमेरिकी राष्ट्रपति दुनिया को कैसे चलाना चाहते हैं, उनकी टैरिफ़ को लेकर देशों को दी जा रही धमकियों से ही पता लग जाता है। उनकी आक्रामकता देखिए कि अभी भारत व अमेरिका के अधिकारियों के बीच ड्रेड व्यापार समझौते को लेकर बातचीत चल ही रही है, इस बीच उनका एक बड़ा दंभूपूर्वक बयान भी आ गया।

ट्रम्प ने कहा कि अमेरिकी उत्पादों की जल्द भारत के बाजारों में पहुंच होने वाली है। उन्होंने यह दावा भी किया कि यह ड्रेड इंडोनेशिया का फूर्ते वाली होगी। अमेरिकी उत्पादों पर भारत में जीरो टैरिफ़ का लागता है। दो दिन पहले ही अमेरिका ने इंडोनेशिया से इस तरह की डील की है, जिसमें इंडोनेशिया पर 19 फीसद टैरिफ़ लगाया गया है। अब एक अगस्त से इंडोनेशिया से अमेरिका जाने वाले सामानों पर 19 फीसद टैरिफ़ चुकाना होगा। वहीं अमेरिकी सामानों पर इंडोनेशिया में कोई टैरिफ़ नहीं देना होगा। ट्रम्प ने अपने ही अंदराज में यह भी कहा कि हमने कई बहराहीन देशों से समझौते किए हैं हमारा एक और समझौता होने वाला है शायद भारत के साथ। उनका घमंडोपन यहाँ नहीं थमता, वह बातचीत के बीच में यह भी बोल गए कि मझे नहीं पता कि हम बातचीत कर रहे हैं। जब मैं लेटर भेजूंगा तो वह समझौता हो जाएगा।

इस तरह की भाषा वह तब बाल रहे हैं जब भारतीय वाणिज्य मंत्रालय की एक टीम अमेरिका पहुंची हुई है। जहां वह ड्रेड व्यापार के लेकर बातचीत करेंगे। बताया जा रहा है कि बातचीत सोमवार से शुरू भी हो गई और इसके गुरुवार तक चलने का उम्मीद है। ऐसे में इस तरह के बतानों का क्या मतलब है। जहां तक बात भारत की है, भारतीय अधिकारी चाहते हैं कि लेइ टैरिफ़ रेट 100% की एक दूसरी से कम हो और इसके बदले में अमेरिका ने उत्पादों के लिए भारत में रियायत चाहता है, लेकिन भारत स्पष्ट कहता रहा है कि वह अपने कृषि और डिरी क्षेत्रों के विदेशी कंपनियों के लिए नहीं खोलेगा। हां भारत जरूर गैर कृषि क्षेत्रों में समझौता करने को चैरूर है। अब यह तो तभी पता चलेगा जब किसी तरह का कोई समझौता सामने आता, लेकिन ट्रम्प का व्यवहार यही बता रहा है कि उन्हें किसी समझौते की परवाह नहीं है और वह अपनी तरफ़ पर ही समझौता करना चाहते हैं। यह किसी भी संप्रभु राष्ट्र के लिए कोई समानजनक तक नहीं हो सकती।

हालांकि भारत की तरफ़ से अभी कोई प्रतिक्रिया समने नहीं आई और यह टीकी ही है, क्योंकि जब तक दोनों देशों के बीच चल रही ड्रेड व्यापार किसी नलीज पर नहीं पहुंचती तब तक किसी प्रतिक्रिया का कोई मतलब नहीं है, लेकिन डोनाल्ड ट्रम्प को इससे फर्क नहीं पड़ता कि बातचीत चल रही है या नहीं। गुरुवार को एक तरह से उन्होंने अपना फरमान सुना दिया। डोनाल्ड ट्रम्प पहले भी कह चुके हैं कि जो देश रूस के साथ व्यापार करेंगे, उससे तेल व गैस लेंगे वे उसके कोपाइजन का शिकाया होंगे और बदले में उन पर 100% प्रतिशत टैरिफ़ लगाया जा सकता है। लगता है कि ट्रम्प को इस बात की भी कोई परवाह नहीं है कि दुनिया उनके विषय में यांत्रिकीय व्यापार को युद्ध के रूप में ले रहे हैं।

## ईथरीय भवित के बाद आती है स्वच्छता

बातचीत को स्वच्छ रखने की परंपरा हमारी जीवनशैली का अधिन अंग है व सांस्कृतिक चेतना प्राचीन काल से ही स्वच्छता पर बल देती रही है, हमारी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना प्राचीन काल से ही स्वच्छता पर बल देती है। अपने घरों, पूजा स्थलों और आपास के बातचीतों को स्वच्छ रखने की परंपरा हमारी जीवनशैली का अधिन अंग है, हां गृहपति महात्मा गांधी कहते थे, स्वच्छता ईश्वरीय भवित के बाद आती है, वे स्वच्छता को धर्म, अध्यात्म और नागरिक जीवन की आधारशिला मानते थे, न्यूनतम संसाधनों का उपयोग करके अपव्यय को न्यूनतम करना और उन्हें अन्य उद्देश्य के लिए पुनः उपयोग करना, हमारी से हमारी जीवनशैली का हिस्सा रहा है।



-प्रोफेसर मुमुक्षु, राष्ट्रपति



## नस्लवाद को हराने वाला मानवता का योद्धा

## नेल्सन मंडेला

नेल्सन मंडेला की शिक्षा की शुरआत क्लार्कबरी मिसनरी स्कूल से हुई। आगे की पढ़ाई के दूसरे कदियों को सिक्षित किया गया और अपना संघर्ष जारी रखा। इस दौरान दृश्य अपीजी और दुनियाभर में मंडेला की मांग उठाए गए। अंततः सरकार ज्ञानी और 11 फरवरी 1990 को नेल्सन मंडेला को जैसे से दिया गया गया। यह क्षण इतिहास में आज भी जीवंत है, जब एक अव्यवेत रंगभेद नीति और एक अव्यवेत रंगभेद के दौरान ही उन्होंने

असमानताओं के विरुद्ध आवाज उठाने शुरू कर दी थी। दक्षिण अफ्रीका में उस समय एक अल्पसंख्यक सरकार द्वारा अपराधिक मूल गति द्वारा अव्यवेत रंगभेद के दौरान ही उन्होंने

को मानवता की शुरआत की शिक्षा की शुरआत क्लार्कबरी मिसनरी स्कूल से हुई। आगे की पढ़ाई के दूसरे कदियों को सिक्षित किया गया और अपना संघर्ष जारी रखा। इस दौरान दृश्य अपीजी और दुनियाभर में मंडेला की मांग उठाए गए। अंततः सरकार ज्ञानी और 11 फरवरी 1990 को नेल्सन मंडेला को जैसे से दिया गया गया। यह क्षण इतिहास में आज भी जीवंत है, जब एक अव्यवेत रंगभेद नीति और एक अव्यवेत रंगभेद के दौरान ही उन्होंने

को मानवता की शुरआत की शिक्षा की शुरआत क्लार्कबरी मिसनरी स्कूल से हुई। आगे की पढ़ाई के दूसरे कदियों को सिक्षित किया गया और अपना संघर्ष जारी रखा। इस दौरान दृश्य अपीजी और दुनियाभर में मंडेला की मांग उठाए गए। अंततः सरकार ज्ञानी और 11 फरवरी 1990 को नेल्सन मंडेला को जैसे से दिया गया गया। यह क्षण इतिहास में आज भी जीवंत है, जब एक अव्यवेत रंगभेद नीति और एक अव्यवेत रंगभेद के दौरान ही उन्होंने

को मानवता की शुरआत की शिक्षा की शुरआत क्लार्कबरी मिसनरी स्कूल से हुई। आगे की पढ़ाई के दूसरे कदियों को सिक्षित किया गया और अपना संघर्ष जारी रखा। इस दौरान दृश्य अपीजी और दुनियाभर में मंडेला की मांग उठाए गए। अंततः सरकार ज्ञानी और 11 फरवरी 1990 को नेल्सन मंडेला को जैसे से दिया गया गया। यह क्षण इतिहास में आज भी जीवंत है, जब एक अव्यवेत रंगभेद नीति और एक अव्यवेत रंगभेद के दौरान ही उन्होंने

को मानवता की शुरआत की शिक्षा की शुरआत क्लार्कबरी मिसनरी स्कूल से हुई। आगे की पढ़ाई के दूसरे कदियों को सिक्षित किया गया और अपना संघर्ष जारी रखा। इस दौरान दृश्य अपीजी और दुनियाभर में मंडेला की मांग उठाए गए। अंततः सरकार ज्ञानी और 11 फरवरी 1990 को नेल्सन मंडेला को जैसे से दिया गया गया। यह क्षण इतिहास में आज भी जीवंत है, जब एक अव्यवेत रंगभेद नीति और एक अव्यवेत रंगभेद के दौरान ही उन्होंने

को मानवता की शुरआत की शिक्षा की शुरआत क्लार्कबरी मिसनरी स्कूल से हुई। आगे की पढ़ाई के दूसरे कदियों को सिक्षित किया गया और अपना संघर्ष जारी रखा। इस दौरान दृश्य अपीजी और दुनियाभर में मंडेला की मांग उठाए गए। अंततः सरकार ज्ञानी और 11 फरवरी 1990 को नेल्सन मंडेला को जैसे से दिया गया गया। यह क्षण इतिहास में आज भी जीवंत है, जब एक अव्यवेत रंगभेद नीति और एक अव्यवेत रंगभेद के दौरान ही उन्होंने

को मानवता की शुरआत की शिक्षा की शुरआत क्लार्कबरी मिसनरी स्कूल से हुई। आगे की पढ़ाई के दूसरे कदियों को सिक्षित किया गया और अपना संघर्ष जारी रखा। इस दौरान दृश्य अपीजी और दुनियाभर में मंडेला की मांग उठाए गए। अंततः सरकार ज्ञानी और 11 फरवरी 1990 को नेल्सन मंडेला को जैसे से दिया गया गया। यह क्षण इतिहास में आज भी जीवंत है, जब एक अव्यवेत रंगभेद नीति और एक अव्यवेत रंगभेद के दौरान ही उन्होंने

को मानवता की शुरआत की शिक्षा की शुरआत क्लार्कबरी मिसनरी स्कूल से हुई। आगे की पढ़ाई के दूसरे कदियों को सिक्षित किया गया और अपना संघर्ष जारी रखा। इस दौरान दृश्य अपीजी और दुनियाभर में मंडेला की मांग उठाए गए। अंततः सरकार ज्ञानी और 11 फरवरी 1990 को नेल्सन मंडेला को जैसे से दिया गया गया। यह क्षण इतिहास में आज भी जीवंत है, जब एक अव्यवेत रंगभेद नीति और एक अव्यवेत रंगभेद के दौरान ही उन्होंने

को मानवता की शुरआत की शिक्षा की शुरआत क्लार्कबरी मिसनरी स्कूल से हुई। आगे की पढ़ाई के दूसरे कदियों को सिक्षित किया गया और अपना संघर्ष जारी रखा। इस दौरान दृश्य अपीजी और दुनियाभर में मंडेला की मांग उठाए गए। अंततः सरकार ज्ञानी और 11 फरवरी 1990 को नेल्सन मंडेला को जैसे से दिया गया गया। यह क्षण इतिहास में आज भी जीवंत है, जब एक अव्यवेत रंगभेद नीति और एक अव्यवेत रंगभेद के दौरान ही उन्होंने

को मानवता की शुरआत की शिक्षा की शुरआत क्लार्कबरी मिसनरी स्कूल से हुई। आगे की पढ़ाई के दूसरे कदियों को सिक्षित किया गया और अपना संघर्ष जारी रखा। इस दौरान दृश्य अपीजी और दुनियाभर में मंडेला की मांग उठाए गए। अंततः सरकार ज्ञानी और 11 फरवरी 1990 को नेल्सन मंडेला को जैसे से दिया गया गया। यह क्षण इतिहास में आज भी जीवंत है, जब एक अव्यवेत रंगभेद नीति और एक अव्यवेत रंगभेद के दौरान ही उन्होंने

को मानवता की शुरआत की शिक्षा की शुरआत क्लार्कबरी मिसनरी स्कूल से हुई। आगे

